ग्रेट निकोबार में पत्तन-नेतृत्व विकास का मृगतृष्णा

यूपीएससी प्रासंगिकता:

- **प्रारंभिक परीक्षा फोकस: स्थान: गालथिया खाड़ी (Galathea Bay), आईएनएस बाज़ (INS Baaz), विझिंजम (Vizhinjam), वधावन (Vadhavan); प्रमुख प्रजातियाँ: लेदरबैक कछुआ (Leatherback turtle), निकोबार मेगापोड, निकोबार क्रेक; नीतियाँ: वन अधिकार अधिनियम 2006, शोम्पेन नीति 2015।**
- **जीएस पेपर 3: समुद्री अवसंरचना, ट्रांसशिपमेंट हब, रसद (लॉजिस्टिक्स) और पत्तन अर्थशास्त्र।**

चर्चा में क्यों? (Why in News)

ग्रेट निकोबार की **गालथिया खाड़ी** में एक **मेगा पोर्ट (बंदरगाह)** बनाने के प्रस्ताव ने 2025 में व्यापक ध्यान आकर्षित किया है। समर्थकों का तर्क है कि यह भारत को एक क्षेत्रीय समुद्री केंद्र में बदलकर, आर्थिक विकास और रणनीतिक क्षमताओं को बढ़ाएगा। हालाँकि, आलोचक चेतावनी देते हैं कि यह परियोजना **पारिस्थितिक पतन** का जोखिम पैदा करती है, **स्वदेशी समुदायों** को खतरे में डालती है, और शायद अपेक्षित आर्थिक और रणनीतिक लाभ देने में विफल रहे।

पृष्ठभूमि (Background)

कंटेनर यातायात के ट्रांसशिपमेंट के लिए भारत वर्तमान में **विदेशी बंदरगाहों**—विशेष रूप से **कोलंबो (श्रीलंका)** और **सिंगापुर**—पर बहुत अधिक निर्भर है। ग्रेट निकोबार पत्तन परियोजना को निम्नलिखित समस्याओं के समाधान के रूप में देखा गया है:

- विदेशी ट्रांसशिपमेंट केंद्रों पर **निर्भरता कम करना।**
- भारत को पूर्वी हिंद महासागर में एक **रणनीतिक और वाणिज्यिक खिलाड़ी** के रूप में स्थापित करना।
- एक समुद्री चाप (maritime arc) बनाने के लिए **विझिंजम (केरल)** और **वधावन (महाराष्ट्र)** जैसे मौजूदा भारतीय बंदरगाहों के साथ एकीकृत करना।

यह परियोजना व्यापार और सुरक्षा के लिए एक **गेम-चेंजर** के रूप में प्रचारित की जाती है, लेकिन एक नज़दीकी विश्लेषण से पता चलता है कि इसके फायदे बढ़ा-चढ़ाकर बताए जा सकते हैं, जबकि इसके जोखिम — संरचनात्मक, भौगोलिक और पारिस्थितिक — को अक्सर कम करके आँका जाता है।

परियोजना का महत्व (Significance of the Project)

- **रणनीतिक महत्व:** भारत की नौसैनिक उपस्थिति और समुद्री निगरानी को बढ़ाता है; चीन को रोकने में मदद मिल सकती है; मौजूदा **आईएनएस बाज़** (INS Baaz) पहले से ही कुछ कवरेज प्रदान करता है।

- **आर्थिक वादा:** क्षेत्रीय कंटेनर यातायात को आकर्षित कर सकता है, कोलंबो/सिंगापुर पर निर्भरता कम कर सकता है, और विझिंजम, वधावन तथा गालथिया खाड़ी को जोड़ सकता है।

- **क्षेत्रीय विकास:** रोज़गार पैदा करता है, बुनियादी ढाँचे में सुधार करता है, और हिंद महासागर व्यापार को बढ़ावा देता है।

- **भू-राजनीतिक लाभ:** इंडो-पैसिफिक में भारत के प्रभाव को मज़बूत करता है, रणनीतिक साझेदारी और क्षेत्रीय सुरक्षा का समर्थन करता है।

- **पर्यटन और स्थानीय विकास:** अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में पर्यटन और सहायक उद्योगों को बढ़ावा देने की क्षमता, समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना।

चुनौतियाँ और कमियाँ (Challenges and Flaws)

- **त्रुटिपूर्ण आर्थिक तर्क:** उच्च पत्तन क्षमता यातायात की गारंटी नहीं देती है (उदाहरण: वल्लारपदम पत्तन)। गालथिया खाड़ी में शहरी केंद्रों, औद्योगिक क्षेत्रों और रसद (लॉजिस्टिक्स) बुनियादी ढाँचे का अभाव है। कोलंबो जैसे सघन फीडर नेटवर्क अनुपस्थित हैं, जिसके लिए भारी **सब्सिडी** की आवश्यकता होगी।

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

- **भौगोलिक बाधाएँ:** मुख्य भूमि से **दूरस्थ स्थान (1,200 किमी)** कंटेनरों के शिपिंग, ईंधन और कर्मियों की लागत को बढ़ाता है। दूरी वाहकों को हतोत्साहित कर सकती है, जिससे वाणिज्यिक व्यवहार्यता कम हो जाएगी।

- **रणनीतिक ग़लतबयानी:** **आईएनएस बाज़** पहले से ही सैन्य उद्देश्यों को पूरा करता है; रणनीतिक उपस्थिति के लिए आर्थिक औचित्य का उपयोग करना भ्रामक है। गालथिया खाड़ी को विझिंजम और वधावन से जोड़ना विशिष्ट समुद्री और वाणिज्यिक वास्तविकताओं की अनदेखी करता है।

- **रसद (Logistical) सीमाएँ:** स्थापित बंदरगाह लागत दक्षता और एकीकृत रसद प्रदान करते हैं; गालथिया खाड़ी में इस पारिस्थितिकी तंत्र का अभाव है। पिछले उदाहरण: **कृष्णापत्तनम** ने उच्च हैंडलिंग लागत के कारण यातायात खो दिया; **विझिंजम** एक ही वाहक (MSC) पर बहुत अधिक निर्भर है।

- **अवास्तविक यातायात लक्ष्य:** बिना प्रतिबद्ध शिपिंग लाइनों के कोलंबो के <8 मिलियन टीईयू (TEUs) से दोगुने से अधिक को संभालने का लक्ष्य अति महत्वाकांक्षी है।

- **पर्यावरण और सामाजिक जोखिम:** स्वदेशी **शोम्पेन** और **निकोबारी** समुदायों को खतरा। प्रवाल भित्तियों, मैंग्रोव, वनों को पारिस्थितिक क्षति का जोखिम, और स्थानीय आजीविका को बाधित कर सकता है।

आगे की राह / सिफारिशें (Way Forward / Recommendations)

- **रणनीतिक स्पष्टता:** यदि लक्ष्य सैन्य संवर्द्धन है, तो इसे वाणिज्यिक पत्तन के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय स्पष्ट और समर्पित **रक्षा बुनियादी ढाँचे** के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करें।

- **आर्थिक यथार्थवाद:** पत्तन नियोजन वास्तविक कार्गो मांग, मज़बूत रसद नेटवर्क और विश्वसनीय वाहक कनेक्शन पर आधारित होना चाहिए। व्यवहार्यता अध्ययनों में परिचालन लागत, मुख्य भूमि से दूरी और कनेक्टिविटी पर विचार करना चाहिए।

- **पर्यावरण सुरक्षा उपाय:** पूर्ण **पर्यावरण प्रभाव आकलन (EIA)** करें। उचित परामर्श के माध्यम से स्वदेशी समुदायों और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

- **वैकल्पिक दृष्टिकोण:** विझिंजम और वधावन जैसे **मुख्य भूमि के बंदरगाहों** को विकसित करें, जिनकी बेहतर कनेक्टिविटी और वाणिज्यिक क्षमता है। आसान रसद वाले स्थानों में क्रमिक विस्तार और ट्रांसशिपमेंट क्षमताओं में सुधार पर विचार करें।

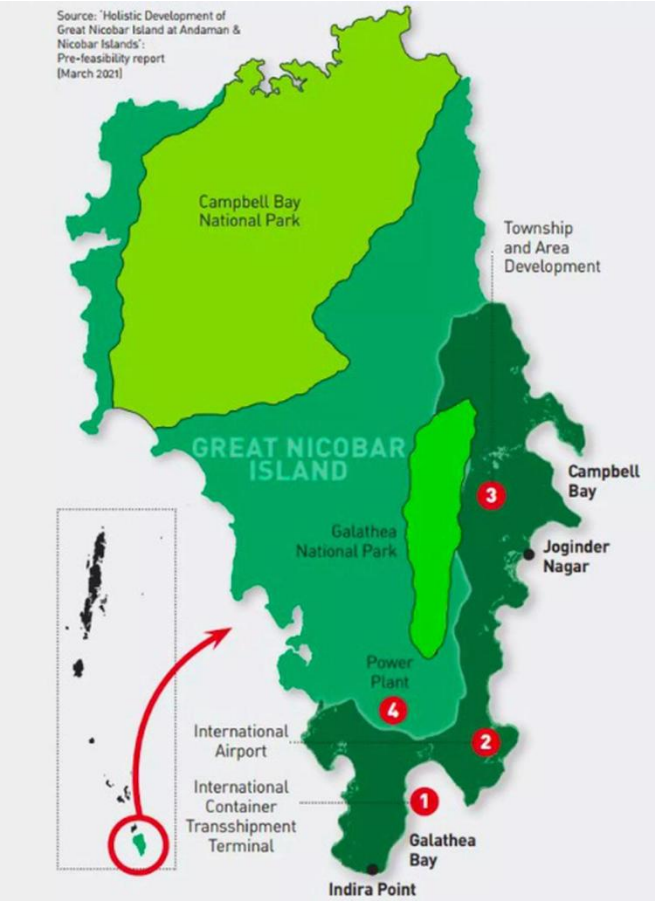

@resultmitra www.resultmitra

- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP):** निवेश जोखिमों को साझा करने, दक्षता में सुधार करने और वाणिज्यिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करें।

- **चरणबद्ध विकास (Phased Development):** छोटी स्तर की परिचालन से शुरुआत करके, प्रदर्शन की निगरानी करते हुए, और केवल तभी विस्तार करते हुए जब यातायात और रसद समर्थन इसे उचित ठहराते हैं, परियोजना को चरणों में लागू करें।

निष्कर्ष (Conclusion)

ग्रेट निकोबार पत्तन महत्त्वाकांक्षा और व्यवहार्यता के बीच के अंतर का उदाहरण है। जबकि इसे एक रणनीतिक और आर्थिक गेम-चेंजर के रूप में विपणन किया जाता है, संरचनात्मक सीमाएँ, भौगोलिक अलगाव, रसद नेटवर्क की कमी और सामाजिक-पर्यावरण जोखिम इसे अत्यधिक अनिश्चित बनाते हैं। इन वास्तविकताओं को संबोधित किए बिना, पत्तन को **गलत महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक** बनने का जोखिम है, जो न तो रणनीतिक प्रभाव और न ही निरंतर आर्थिक विकास प्रदान करेगा।

ग्रेट निकोबार द्वीप की भौगोलिक जानकारी (About Geography of Great Nicobar Island)

स्थान (Location):

- ग्रेट निकोबार भारत का सबसे दक्षिणी द्वीप है।
- यह अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह का हिस्सा है, जिसमें 600 से अधिक द्वीप शामिल हैं।

स्थलाकृति (Topography): यह द्वीप पहाड़ी है और घने वर्षावनों (rainforests) से आच्छादित है।

जलवायु (Climate): यहाँ सालाना लगभग 3,500 मिमी वर्षा होती है, जो समृद्ध जैव विविधता का समर्थन करती है।

वनस्पति और जीव (Flora and Fauna):

- वर्षावन और तटीय क्षेत्र कई लुप्तप्राय और स्थानिक (endemic) प्रजातियों का घर हैं, जिनमें शामिल हैं:
  - विशालकाय लेदरबैक कछुआ (Giant leatherback turtle)
  - निकोबार मेगापोड (Nicobar megapode)
  - ग्रेट निकोबार क्रेक (Great Nicobar crake)
  - निकोबार केकड़ा खाने वाला मकाक (Nicobar crab-eating macaque)
  - निकोबार ट्री श्रू (Nicobar tree shrew)

भूमि क्षेत्र और वनस्पति (Land Area and Vegetation):

- यह 910 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है।
- तटरेखा के किनारे व्यापक रूप से मैंग्रोव और पंडन वन पाए जाते हैं।

IAS-PCS Institute
Result Mitra रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

यूपीएससी मुख्य परीक्षा शैली के प्रश्न:

प्रश्न: भारत-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा के संदर्भ में ग्रेट निकोबार द्वीप विकास परियोजना के भारत के लिए सामरिक और आर्थिक महत्व पर चर्चा करें। (150 शब्द)